प्राक्कथन

प्रारम्भ से ही मेरा झुकाव हिन्दी भाषा और साहित्य के अध्ययन–अनुशीलन के प्रति विशेष रूप से रहा है। हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल, विशेष रूप से छायावाद काव्य मुझे सदैव आकृष्ट करता रहा है। छायावाद के उल्लेखनीय कवियों में भगवतीचरण वर्मा का भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सामान्यतः भगवतीचरण वर्मा उपन्यासकार के रूप में जाने पहचाने जाते हैं। भगवतीचरण वर्मा प्रमुख छायावादी कवियों में भी अपने विशिष्ट योगदान के लिये जाने जाते हैं। इनकी कवितायें छायावादी प्रवृत्तियों को लेकर चली हैं। लेकिन दैव–दुर्विपाक से भगवतीचरण वर्मा की कविताओं को लेकर शोधकार्य नहीं के बराबर हुआ है।

इस दृष्टि से शोधकार्य हेतु शोधार्थियों का ध्यान उनके कहानी या उपन्यासों की ओर ही अधिक गया, काव्य पक्ष तो कहीं छूट सा गया, जब कि वर्मा जी के काव्य में अनेक कविताओं के साथ–साथ 'भैंसागाड़ी', 'भू–की छाती पर फोड़ो से' और 'ये उठे हुये कच्चे घर' आदि कवितायें एक सशक्त कवितायें हैं। वर्मा जी का झुकाव अपनी बाल्यावस्था से ही काव्य सृजन की ओर था। उन्होंने अपने जीवन काल में कई काव्य–कृतियों की रचना की जिनमें प्रमुख हैं– 'मानव', 'प्रेम संगीत', 'मधुकण' आदि। 'मानव' नामक कविता संग्रह में समाज में हो रहे अंधविश्वास, नारी की कारूणिक स्थिति और गरीब किसानों की दयनीय स्थिति को उँकेरा गया है। 'प्रेम संगीत' और 'मधुकण' प्रेम परक काव्य हैं। वर्मा जी की सभी कृतियों में छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियाँ दृष्टिगत होती हैं, जो निम्न हैं – मानवीकरण, देश-प्रेम, रहस्यवाद, प्रकृति-प्रेम, गीतात्मकता आदि। इन सबके बावजूद भी शोधार्थियों का ध्यान इनके काव्य-पक्ष की ओर नहीं गया। इसलिए मैंने अपने शोध-कार्य के लिये इनके इस उपेक्षित पक्ष को चुना। वस्तुतः मेरा शोधकार्य **'छायावाद की पृष्ठभूमि में भगवतीचरण वर्मा के काव्य का अनुशीलन'** भगवतीचरण वर्मा के काव्य सर्जन का निष्पक्ष एवं प्रमाणिक मूल्यांकन करने की दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ में स्नातकोत्तर अध्ययन के दौरान मेरी रूचि आधुनिक हिन्दी काव्य की ओर विशेष रूप से उन्मुख हुई। जब मैंने अपने विचार

प्रो0 एस0 एन0 शर्मा जो हमें आधुनिक हिन्दी कविता, विशेषकर 'कामायनी' का अध्ययन अध्यापन कराते थे, के समक्ष प्रकट किये, तो उन्होंने भगवतीचरण वर्मा के काव्यपक्ष पर शोध करने की सलाह दी। चूंकि वर्मा जी के काव्य पर कोई शोध नहीं हुआ था अतः मेरे शोध निर्देशक प्रो0 एस0 एन0 शर्मा ने मेरे विषय को इस रूप में रखने का सुझाव दिया। उक्त विषय उनकी उद्‌भावक प्रेरणा की परिणति है।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध कुल आठ अध्यायों में विभक्त है। शोध प्रबंध के **प्रथम अध्याय** में छायावाद की पृष्ठभूमि पर विचार किया गया है। इसमें छायावाद की पृष्ठभूमि और परिस्थितियों पर गहन दृष्टि से विचार विमर्श हुआ है।

द्वितीय अध्याय में छायावादी काव्य–धारा के स्वरूप के साथ वृहत्रयी कवि प्रसाद, पंत, निराला, और लघुत्रयी कवि महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा और भगवतीचरण वर्मा के काव्य को चिंतन का विषय बनाया गया है।

तृतीय अध्याय भगवतीचरण वर्मा के कृतित्व–परिचय के साथ–साथ काव्यानुशीलन के मानक बिन्दु–सौन्दर्य मूलक, प्रेम मूलक, कल्पना मूलक, कला मूलक और समाज एवं राष्ट्र मूलक अनुशीलन आदि के विमर्श को प्रस्तुत करता है।

चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम् और अष्टम् अध्यायों में भगवतीचरण वर्मा के काव्य का क्रमशः सौन्दर्य मूलक, प्रेम मूलक, कल्पना मूलक, कला मूलक एवं समाज और राष्ट्र मूलक बिन्दुओं के आधार पर विवेचन–विश्लेषण हुआ है। ये अध्याय इस प्रबंध के मेरूदण्ड हैं।

अन्त में उपसंहार के रूप में उपर्युक्त शोधसार के साथ–साथ छायावादी काव्य में वर्मा जी के योगदान पर दृष्टिपात किया गया है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि वर्मा जी उपन्यासकार होने के साथ–साथ कविता के क्षेत्र में न केवल एक सशक्त हस्ताक्षर हैं, अपितु छायावाद में उनके योगदान की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

शोध प्रबन्ध पूर्ण होने पर आभार एवं कृतज्ञता ज्ञापन मेरे लिये बहुत अहम और महत्वपूर्ण है। परमब्रहम की कृपा, आत्मचिंतन और परमादरणीय गुरू प्रो0 एस0 एन0 शर्मा के दिशा–निर्देशन में कार्य करने का सुअवसर प्राप्त होने के कारण मेरी निराशा का तिमिर गुरूजन के प्रखर आलोक से परास्त हो गया। अध्ययंन एवं विचार विश्लेषण

के क्रम में मुझे मेरे गुरू प्रो० एस० एन० शर्मा से अपूर्व प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं स्नेह प्राप्त हुआ। उन्होंने अपनी व्यस्त दिनचर्या में से बहुमूल्य समय निकालकर शोध सम्बन्धी मेरी समस्त कठिनाईयों का न केवल निरसन किया, वरन् अपेक्षित परामर्श देकर उसे हर दृष्टि से सुधारा और सँवारा भी, जिससे प्रस्तुत शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कलेवर को प्राप्त कर सका।

इसी क्रम में प्रो० एम० ई० जुबैरी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने न केवल मेरी समस्याओं का निराकरण किया, अपितु किसी भी प्रशासनिक समस्या के लिये अनवरत, कृपा दृष्टि बनाए रखी।

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के सभी गुरूजनों, विशेष रूप से डॉ० शम्भुनाथ तिवारी के प्रति भी मैं अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके बहुमूल्य सुझावों से मुझे बहुत सहायता मिली है। इस दृष्टि से गुरूओं की आत्मीय निकटता और उनके द्वारा निरन्तर अध्ययन की ओर उन्मुख करते रहने की प्रेरणा मुझे शिथिल एवं दिग्भ्रमित होने से सदैव बचाती रही है। उनके अमूल्य सुझाव एवं परामर्श ने मेरे लेखन कार्य को गतिशीलता प्रदान की है।

मैं अपने पूज्य ससुर श्री रामसेवक शर्मा एवं सासू माँ श्रीमती मुन्नी देवी का आभार व्यक्त करती हूँ जिनके आशीर्वाद से मैं यह शोध–प्रबन्ध पूर्ण करने में सफल हो सकी। साथ ही मैं अपनी माँ श्रीमती शकुन्तला शर्मा को कभी नहीं भुला सकती जिनके आशीर्वाद के बिना यह संभव ही नहीं था। आभार प्रदर्शन की इस श्रृंखला में मैं अपने सहचर डॉ० विनय कुमार शर्मा को किन शब्दों में आभार प्रकट करूँ, मैं नहीं जानती, वे तो मेरे अपने हैं, पर हाँ, यदि विनय इस अभियान में मेरे साथ न होते, तो इसकी पूर्णाहुति की कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

इसी क्रम में मैं अपने दोनों बच्चों वंशिका और दिव्यांश को साधुवाद देती हूँ जिनकी मुस्कान ने मेरे हर श्रम को, हर थकावट को दूर कर नयी ऊर्जा प्रदान की साथ ही डॉ० राम किशन शर्मा के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने समय–समय पर मेरी कठिनाइयों को दूर किया।

कहा जाता है कि दुनिया में हमारे सभी रिश्तेदार परम पिता बनाकर भेजता है, परन्तु केवल एक रिश्ता ऐसा है जिसे हम स्वयं स्वेच्छा से बौद्धिक स्तर पर जाँच परख कर बनाते हैं, वह रिश्ता होता है दोस्ती का। मैं दिल से आभारी हूँ उन सभी मित्रों का जो मित्रता की परिभाषा को समझते हैं उसका अनुकरण करते हैं, जिनके अपार सहयोग और प्रेरक क्षमता ने कदम–कदम पर मेरा साथ दिया। इस शोध कार्य के दौरान जिन–जिन विद्वानों, मित्रों आदि का मुझे आर्शीवाद और सहयोग मिला है उन सब के प्रति मेरा हार्दिक नमस्कार।

मैं कृतज्ञ हूँ कार्यालय से सम्बद्ध डॉ0 परवेज़ फात्मा, शकील भाई, सलमान भाई, विशारद भाई और अब्दुल वहाब भाई के प्रति जिन्होंने जो भी कार्य, जिसके लिये हुआ उसमें पूरी–पूरी सहायता एवं सहयोग दिया तथा हिन्दी के सेमिनार प्रभारी डॉ0 सैय्यद मुहम्मद माज़ भाई के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने जब जिस किताब की आवश्यकता पड़ी उपलब्ध करा दी।

शोध कार्य की दृष्टि से किसी समृद्ध पुस्तकालय की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इस दृष्टि से मेरे शोध कार्य में मौलाना आज़ाद लाइब्रेरी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसके अधिकतर कर्मचारियों ने मेरे साथ पारिवारिक सदस्यों जैसा व्यवहार किया। मेरा सम्बन्ध विशेष रूप से हिन्दी सैक्शन और हिन्दी स्टेक्स से रहा है। नदीम भाई और भाई पीर मोहम्मद का भ्रातृत्वपूर्ण व्यवहार, सहयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पीर भाई ने संदर्भ ग्रन्थ सूचीको क्रमबद्ध करने में मेरी अकल्पनीय सहायता की। मैं उन सबके सहयोग के लिये उनका अभार मानती हूँ।

अंतस की गहराइयों से मैं अपनी गुरू माता डॉ0 बीना शर्मा, प्रो0 केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा के प्रति श्रद्धावनत हूँ जिन्होंने समय–समय पर मेरा मार्गदर्शन करते हुए मेरे शोध कार्य में अपेक्षित सहायता की।

मेरे ज्ञान की सीमा का फलक इतना व्यापक नहीं है कि मैं कोई बड़ा दावा कर सकूँ, विश्वास इतना ही है कि प्रस्तुत अनुसंधानात्मक प्रयास विद्वजन से प्रोत्साहन परक संस्तुति प्राप्त कर सकेगा।

अन्त में मैं उन सब के प्रति आभारी हूँ, जिनका सहयोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मेरे साथ हमेशा रहा। यथेष्ट ध्यान रखने के बावजूद यत्र–तत्र जो वर्तनीगत अशुद्धियाँ रह गयी हैं, उनके लिये मैं क्षमायाचना के साथ प्रस्तुत प्रबन्ध को परीक्षणार्थ प्रस्तुत करती हूँ।

शोधार्थी
रेखा शर्मा
(रेखा शर्मा)